International Journal of Information Movement Vol.3 Issue IX (January 2019)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 6-8

मानव जीवन में संगीत का महत्व

डॉ अनीता शर्मा
सहायक प्रवक्ता, संगीत गायन
एस0 एन0 आर0 एल0,
जयराम गर्ल्ज कॉलेज,
लोहार माजरा, कुरूक्षेत्र ।

भारतीय संगीत प्राचीन सभ्यता का प्रतीक है। भारतीय सभ्यता व संस्कृति कहीं बाहर से नहीं आई वरन् यह उसकी अपनी ही संस्कृति है। मनुष्य एक भावनाशील प्राणी है। अन्य प्राणियों की अपेक्षा भावों को प्रकट करने में अधिक सक्षम है। मानव बचपन से ही विभिन्न आन्तरिक भावनाओं प्रेम, घृणा, क्रोध, द्वेष और ईर्ष्या आदि का अनुभव करता है। और इन सभी भावों का व्यवहार रस के अन्तर्गत होता है। संगीत कला भारतीय संस्कृति की आत्मा है। भारतीय संस्कृति के आदि तथा इसके उद्भव काल से ही संगीत इसका अभिन्न अंग रहा है। वर्तमान समय में व्यवस्था तनावयुक्त एवं प्रतियोगी समाजिक परिस्थितयों में संगीत ही एक ऐसी कला है। जो मानव के आहत मन व आत्मा को क्षणभर के लिए सही शांति व सुख प्रदान करती है। जो व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के साथ–साथ उसे प्रलौकिक तत्वों का समावेश करके व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का कारण बनती है। एक सभ्य, सुसंस्कृत, सुयोग्य एवं सहृदय व्यक्त्ति का निर्माण करती है। इसलिए संगीत की शिक्षा परम्परा भी प्राचीनकाल से है। संगीत मनुष्य की भावनाओं की अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन है। इसमें शिक्षा का समावेश करने से नैतिकता का अर्विभाव भी हो जाता है। अन्तरात्मा का उत्थान तथा उसे कलात्मक आनन्दमय स्वरूप प्रदान करना ही संगीत का मुख्य ध्येय है। स्वर्गीय रविन्द्र नाथ ने भी इसे सौन्दर्य का प्रकार एवं संजीव प्रदर्शन माना है। राग परिचय भाग एक के अनुसार ''संगीत वह ललित कला है। जिसमें स्वर, लय के द्वारा अपने भावों को प्रकट कर सकते हैं'' संगीत शब्द गीत शब्द में सम् उपसर्ग लगाकर बना है। सम् अर्थात सहित और गीत अर्थात् गान। गान के सहित अंगभूत क्रियाओं (नृत्य) व वादन के साथ किया कार्य संगीत कहलाता है। स्वर, लय, ताल, शुद्ध उच्चारण एवं शुद्ध मुद्रा सहित जिसे गाया जाए वही संगीत है। गीत, वाद्य, नृत्य यधपि तीनों कलाओं को मिलाकार ही संगीत है। फिर भी तीनों कलांए एक दूसरे से स्वतन्त्र है। गायन के अधीन वादन है व वादन के अधीन नृत्यकला है। तीनों कलाओं में गायन कला प्रधान कला है।

विश्व भर में सात्विक संगीतकार प्रायः दीर्घायुषी पाए जाते हैं। इसका रहस्य है कि सात्विक संगीत जीवन शक्ति को बढाता है। संगीत से हमारे कार्य करने की क्षमता बढ़ती है। हम देखें तो दैनिक जीवन में कुछ ना कुछ कार्य करते रहते हैं लेकिन अगर आप धीमी आवाज में अपना मन प्रसन्न करने वाले संगीत को सुनते हुए कार्य करें तो हम जानते हैं कि खाली समय हमें कुछ भी गलत करवा सकता है। यानि अगर हम कुछ करते रहे और व्यस्त रहे तो हमारे लिए यह बात अच्छी है। आप उस समय को संगीत का आनंद ले कर गुजार सकते है तो इससे आपके कई लाभ होते हैं। आप मानसिक रूप से स्वस्थ रहेंगे अगर आप संगीत के साथ जुड़े रहेंगे।

संगीत के द्वारा आप समस्त बिमारियों को भी दूर कर सकते हैं। क्योंकि संगीत आपको बहुत खुशी देता है, आनन्द देता है। संगीत का असर हर किसी पर देखा जाता है। चाहे व बच्चा हो, जवान हो या कोई बुजुर्ग

हो। हर व्यक्ति इससे प्रभावित होता है। जहां एक छोटा बच्चा भी संगीत सुनकर प्रभावित होता है और व्यक्ति कितना भी दुःखी हो संगीत सुनकर वह अपना सारा दुख भूल जाता है। नौजवानों के जीवन में तो संगीत उन्हे बहुत प्रभावित करता है। बुजुर्गों का समय संगीत के सहारे सहज हो जाता है। हर व्यक्ति के जीवन में संगीत का बहुत महत्व है। सुबह की शुरूआत किसी भजन से की जाए तो परिवार में घर का वातावरण भी अच्छा रहता है। हमारे दिमाग में ख्याल अच्छें आयेंगे, परिवार में खुशी व खुशहाली आती है। संगीत तो वास्वत में वह जादू है जो हर व्यक्ति को अपनी और आकर्षित करता है। संगीत से आपकी कार्य क्षमता बढ़ जायेगी और आपका कार्य में आनन्द प्राप्त होगा। आपको कार्य करते हुए समय का पता नही चलेगा। आप कार्य बडी तेजी से और बहुत सा कार्य कर सकते हैं आपको किसी प्रकार का आलस महसूस नहीं होगा क्योंकि संगीत आपका मनोरंजन भी करता है। और आपको कार्य भी ठीक ढंग से करने की क्षमता प्रदान करता है। संगीत हमारे लिए इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे हमारे मानसिक रोगों का ईलाज भी होता है। बहुत जगहों पर देखा गया है कि संगीत का बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ता है। बहुत से ऐसे लोंग है जो मानसिक रोग से ग्रसित है अगर उन्हें मन पसन्द संगीत सुनवाया जाये जो वे इस रोग से बाहर निकल आते हैं। संगीत उन पर एक दवा के रूप में कार्य करता है। संगीत के द्वारा लोग अपनी पुरानी यादों से जुडे रहते हैं। और वह एक स्वस्थ जीवन भी जी सकते है। आज व्यक्ति इतना व्यस्त है कि वह मानसिक रूप से ग्रस्ति है। आज वह अगर संगीत के साथ जुडा हुआ है तो वह इस बिमारी को दूर कर सकता है। एक विशेष प्रकार का संगीत आपके किसी भी दोस्त या किसी भी रिश्ते की याद दिला सकता है क्योंकि संगीत हमारे जीवन का एक विशेष हिस्सा है। संगीत व्यक्ति की आयु को बढाता है। इसका रहस्य यह है कि संगीत व्यक्ति को शक्ति देता है। कानों द्वारा यह संगीत सुनने से तो यह लाभ होता ही है अपितु किसी व्यक्ति को कान बंद करवाके उसके पास संगीत बजायाजाये तो भी संगीत के स्वर, ध्वनि की तंरगे उसके शरीर को छूकर जीवन शक्ति को बढाती है। संगीत के स्वर बिमारी भी बाहर निकालने में सहयोगी है। इस प्रकार हम कह सकतें हैं कि संगीत अरोग्यता के लिए लाभदायत है। जलप्रभात झरनों के कल–2, छल–2 मधुर ध्वनि से भी जीवन शक्ति का विकास होता है। पक्षियों के कलरव से भी व्यक्ति की प्राणशक्ति बढती है। संगीत तो एक सर्वोत्कृष्ट ललित कला है। संगीत मर्मज्ञों के लिए सर्वोच्च साधना एवं उपासना हैं भगवत् स्मरण के लिए संभवतया शब्द संगीत ही सर्वश्रेष्ठ साधन है। स्व्यं भगवान श्री कृष्ण जी ने एक बार संगीतचार्य नारद से कहा था 'हे नारद, न तो मै बैकुष्ठ में रहता हूँ न योगियों के हृदय में अपितु वहां रहता हूँ जहां मेरे भक्त संगीत की चर्चा करते हैं।

संगीत में आलौकिक आनन्द है। संगीत के साथ जप करने से मन ईश्वर के नाम एंव रूप में लीन होने से एकाग्रता की शक्ति बढ़ती है। एक अच्छे, सात्विक, पवित्र संगीत की ध्वनि से एवं प्राकृतिक आवाजों से जीवन शक्ति का विकास होता है। श्री कृष्ण बांसुरी बजाया करते तो सुनने वालों पर क्या प्रभाव पडता था यह सारा जगत जानता है। श्री कृष्ण जैसा संगीतज्ञ विश्व में और कोई नहीं हुआ। नारद जी भी वीणा और करताल के साथ हरि स्मरण किया करते थे। उन जैसा मनोवैज्ञानिक संत मिलना मुश्किल है। संगीत को संसार में एक प्रभुत्व कला के रूप में जाना जाता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संगीत साथ रहता है। बल्कि हम सकते हैं कि जन्म से मृत्यु तक संगीत हमारे साथ साथ चलता रहता है। जैसे ही बालक इस जगत में आता है। जो वह अपना प्रथम परिचय रोने से संगीत द्वारा करता है। जिस समय वह संसार से विदा लेता है तो भी संगीत द्वारा

राम नाम की महिमा बताई जाती है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत हमारे ऋषि–मुनियों की अपार साधना का परिणाम है। संगीत को उन्होंने ईश्वरीय अराधना का प्रमुख साधन माना है। वर्षों की अटूट साधना व परिश्रम द्वारा उन्होंने भारतीय शास्त्रीय संगीत को वैज्ञानिक दृष्टि से विकसित किया व उसके सिद्धान्त निश्चिय किए। संगीत वह कला है जब कलाकार अपने मन के भावों का गाकर प्रकट करता है। इसलिए अन्तरात्मा का उत्थान तथा उसे कलात्मक आनन्दमय स्वरूप प्रदान करना ही संगीत का मुख्य ध्येय है। संगीत कला भारतीय संस्कृति की आत्मा है। वर्तमान समय की व्यस्त, तनावयुक्त एवं प्रतियोगी सामाजिक परिस्थितियों में संगीत ही एक ऐसी कला है। जो मानव के आहत व मन एवं आत्मा को क्षण भर के लिए शांति व सुख प्रदान करती है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी संगीत कला सर्वोच्च कला है। सम्पूर्ण विश्व में जहां भी धर्म ने स्वयं को विस्तृत करने का प्रयास किया संगीत कला उसमें सहायक रूप में प्रस्तुत होती है। मनुष्य अपनी आकाक्षांए–हर्ष और विषाद इन कलाओं के माध्यम से प्रकट करता आ रहा है और संगीत कला इन सब कलाओं में सर्वश्रेष्ठ है। श्री वास्तव जी के अनुसार अपने मनोगत भावों का सौन्दर्य के साथ दृश्य रूप से व्यक्त करना ही संगीत कला का ध्येय है। सौन्दर्य वह तत्व है जिसके कारण, भाव, रस, आनन्द एवं सन्तुष्टि प्राप्त होती है। संगीत का मुख्य लक्ष्य ही सौन्दर्य एवं रस की निष्पति करना है । संगीत के द्वारा रस की अभिव्यक्ति सहजता से की जा सकती है। संगीत वह कला कला है जहां व्यक्ति अपना दूजापन भी भूल जाता है । मानव जीवन के कण–2 में संगीत समाया हुआ है। जन्मोत्सव, तीज– त्यौहारो तथा विवाह आदि में संगीत की मधूर ध्वनि सुनाई देती है। हमारा कोई भी पर्व व उत्सव ऐसा नही है जिसे मधुर स्वरों में न सजाया जाए। होली के रंग तीज के गीत हो, वसन्त की मादक हवा में लहराते वसन्ती गीत, सभी इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। महान सन्तों व महात्माओं ने भी परम ब्रहमा से अपना सम्बन्ध संगीत द्वारा ही जोड़ा। दुःखी हृदय को सात्वना देने, व्यक्ति हृदय की पीडा हरने में संगीत ने अपना अद्भुत प्रभाव दिखाया है। एक और मॉ की ममता भरी मीठी लोरियां शिशू को वात्सल्य रस का आनन्द देती है तो दूसरी और संगीत की प्रेरणा भरी धुनों से सैनिकों में वीरता व उत्साह का संचार होता है। अन्त यह शाश्वत सत्य है कि केवल संगीत ही ऐसी कला है जो किसी राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने का सबसे शक्तिशाली माध्यम है। सारे विश्व में बंधुत्व की भावना जगाने तथा सच्ची मानव का संदेश पहुंचाने में भी संगीत का स्थान सर्वोपरि है।

संगीत की इस रसमयी सरिता में आवागन करके मानव सच्ची, सहृद्धयता और विश्व बंधुत्व को सहज ही प्राप्त कर सकता है।

सहायक ग्रन्थ सूची

1.राग परिचय भाग 1 पृ0–15

2.संगीत शास्त्र दर्पण शांति गोवर्धन पृ0 –10

3.संगीत ज्ञान पृ0 –89, ग्लोब पब्लिकेशन अम्बाला

4.शास्त्रीय संगीत पृ0–2, डा0 सुमन लता

5. संगीत रत्नावली पृ0–262, 265 , डा0 अशोक यमन

6.निबन्ध संगीत, लक्ष्मी नारायण संगीत कार्यालय सूची